लॉक डाउन पर भारी पड़ता नशा का सेवन

नरेंद्र सिंह बिष्ट
नैनीताल, उत्तराखंड

जहाँ पूरा संसार कोरोना से जंग लड़ रहा है वहीं भारत भी इसके प्रभाव सेअछूता नहीं हैं। देश में संक्रमित होने और मरने वालों की संख्या में लगातार वृद्धि हो रही है। हालांकि इस दयनीय स्थिती से निपटने के लिए सरकार द्वारा जो लॉक डाउन किया गया था, वह अन्य देशो की अपेक्षा अधिक कारगर सिद्ध हुआ है। लेकिन अर्थव्यवस्था को चरमराता देख सरकार द्वारा कुछ शर्तों के साथ ज़रूरी और कुछ गैर ज़रूरी वस्तुओं की दुकानों को खोलने की अनुमति दी गई। परंतु पहले ही दिन लोगों द्वारा लॉक डाउन तोड़ने की ऐसी भयानक तस्वीर प्रस्तुत की गई, जिस को देखकर मानवता भी शर्मसार हो गई होगी।

भारत में किसी खुली भर्ती में भी शायद इतनी भीड़ देखने को नहीं मिली होगी जितनी लॉक डाउन में नरमी बरतने के पहले दिन शराब और दारू के ठेकों पर देखने को मिली। बात चाहे देश की राजधानी की हो या किसी भी राज्य अथवा उसके ज़िले की। भीड़ में सभी आयु वर्ग के लोगों की संख्या दिखी। देश के सभी राज्यों में भारी टैक्स के बावजूद करोड़ों रूपए की शराब की बिक्री हुई। उत्तराखंड के देहरादून मे पहले ही दिन 1.34 करोड़ की शराब का बिकना एक रिकॉर्ड बन गया। नैनीताल मे भारी ओला वृष्टि के बावजूद लोगो का शराब की दूकान के बाहर लंबी कतारें लगना इस नशा का उनके ऊपर हावी होना दर्शाता है।

महज़ नशा के लिए लोगों का अनियंत्रित होकर सरेआम लॉक डाउन का उल्लंघन करना और सोशल डिस्टेंसिंग की धज्जियाँ उड़ाना न केवल चिंता का विषय है बल्कि हज़ारों कोरोना वॉरियर्स के कठिन परिश्रम का अपमान भी है। केवल अपनी इच्छापूर्ति के लिए सरेआम सोशल डिस्टेंसिंग को तोड़कर हम न सिर्फ खुद को खतरे में डाल रहे हैं बल्कि पूरे समाज के लिए भी परेशानी का कारण बन रहे हैं। शराब की बिक्री जहां राजस्व के लिये जरुरी है वहीं यह अनियंत्रित भीड़ कोरोना के लिये आसान रास्ता भी उपलब्ध करा सकता है।

इस मुश्किल समय में जबकि कोरोना भयंकर रूप से अपना पांव पसार रहा है, सरकार को इस ओर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है। हालांकि सबसे बड़ी ज़िम्मेदारी आम नागरिकों की है। यदि एक आम आदमी सरकार द्वारा दी जा रही रियायत का ज़िम्मेदारी के साथ पालन करते हुए केवल ज़रूरत के लिए घर से बाहर निकले, तो न केवल सभी की आवश्यकताएं पूरी हो सकती हैं बल्कि हम आसानी इस महामारी पर विजय भी पा सकते हैं।